आखर हिंदी पत्रिका; e-ISSN-2583-0597 खंड 5/अंक 3/अगस्त 2025
Received: 15/8/2025; Published: 28/8/2025

कविता

चल रे पथिक

विजया अमृत
सहायक प्राध्यापिका, हिन्दी
मैसूर

विजया अमृत , चल रे पथिक , आखर हिंदी पत्रिका, **खंड 5/अंक 2/जून 2025,** (218-219)
https://doi.org/10.5281/zenodo.17072895

This work is licensed under CC BY-NC 4.0

चल रे पथिक चलना तेरा काम है,

जो बाधाओं से डर जाए वो बनता कहाँ महान है।।

तू हौंसला तो कर एक बार,

ज़मीं क्या तेरे कदमों में झुकता यह आसमां है।।

गिरने के बाद उठ और चल चलने में तेरी हार नहीं ,

तू इंसान है कोई भगवान नहीं ।।

किसकी राह देख रहा है उठ और दौड़,

जीवन संक्षिप्त है इसमें कोई विश्राम नहीं।।

अभी तो जीवन की सुबह हुई है ,

ढलती सूरज लाया शाम नहीं।।

जीवन तो निरंतर चलने का नाम है ,

इसमें कोई पूर्णविराम नहीं।।

जो तू पूरा न कर सके,

ऐसा कोई दिल का अरमान नहीं।।

आगे बढ़ और अपने सपनों को पूरा कर ,

यह तेरे सपने हैं ,बाजारों में बिकने वाला कोई सामान नहीं।।

ज़िंदगी एक बार मिलती है,इसे सार्थक करता जा,

मरने के बाद भी हो तू गुमनाम नहीं।।

चल रे पथिक चलना तेरा काम है,

जो बाधाओं से डर जाए,वो बनता कहाँ महान है।।

****